© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 09 , Issue : 04 | October - December 2022

तुलसीदासजी की राजनीतिक परिस्थितियों पर विश्लेषणात्मक अध्ययन

अरूण सिंह
विषय– हिन्दी साहित्य
डॉ. नवनीता भाटिया, सहायक प्रोफेसर
(ओ.पी.जे.एस. विश्वविद्यालय)

सार

राज्य उस विशेष भू–भाग का नाम है, जहाँ एक ही शासन तंत्र के अन्तर्गत वहां के निवासियों के जीवन की सुरक्षा तथा प्रशासन की व्यवस्था होती है और इस भू–भाग के पास–पड़ोस के अथवा दूरस्थ राज्यों के साथ संबंध निर्धारित होता है। इस तरह राज्य एक ऐसी प्रभुसत्ता सम्पन्न इकाई है, जिसके अन्तर्गत भू–भाग, शासन वर्ग, जनसमाज और उसके आर्थिक एवं सामाजिक प्रयास सभी आ जाते हैं। मानव समाज के आदि काल में राज्यों की सत्ता नहीं थी, उस काल में मानवों के समूह तो थे, किन्तु उनका संगठित समाज नहीं था।

ये मानव समूह बर्बरावस्था में कबीलों के रूप में रहते थे, गुफाओं में निवास करते थे और शिकार और अन्न संचय द्वारा जीवन यापन करते थे। कालान्तर में जब पशुपालन एवं कृषि युग का प्रारंभ हुआ तो ये कबीले झोपड़ियाँ बनाकर रहने लगे और अन्य कबीलों के साथ उनका संबंध भी स्थापित हुआ। इस प्रकार परिवार, ग्राम और कुलों का विकास हुआ। किसी विशेष भू–भाग में जहाँ एक ही कुल से संबंधित लोग निवास करते थे और एक ही भाषा बोलते तथा एक प्रकार की रीति–रिवाजों एवं वेषभूषा को अपनाकर चलते थे, रहने वाले लोगों का समूह ही समाज कहलाया।

प्रमुख शब्दः– प्रशासन, विकास और समूह।

तुलसीदासजी की राजनीतिक परिस्थितियां

मानव समाज की उन्नति में राज्य का अत्यन्त महत्व है। विभिन्न प्राचीन ग्रन्थों में अराजक राजहीन दशा का भयावह रूप चित्रित है, जिससे बचाव पाने के लिए संगठन और बाद में राज्य का विकास हुआ। मनुस्मृति में बतलाया गया है कि जब राजा की अनुपस्थिति में दुष्टों के भय से प्रजा चीत्कार करने लगी थी तभी ईश्वर ने प्रजा की रक्षा के हेतु राजा की सृष्टि की। बाल्मीकि रामायण में अराजक दशा का सजीव चित्र अंकित किया गया है – जैसे बिना जल की नदी अथवा बिना घासफूस का वन अथवा बिना चरवाहे के गौवें होती हैं, वैसे ही बिना राजा का राष्ट्र है।' अराजक राष्ट्र में कोई किसी का नहीं होता, मछलियों की भांति परस्पर एक दूसरे का भक्षण कर डालते हैं।'

इन उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि चारों तरफ की अशान्ति, अव्यवस्था, क्लेश एवं दुख के स्थान पर सुख, शान्ति, व्यवस्था की स्थापना करने के हेतु राज्य का जन्म हुआ।

गोस्वामी तुलसीदास मुगल शासन काल के मध्य भाग में अवतरित हुए थे। उनका जीवन अकबर, जहांगीर और शाहजहां के शासन काल में व्यतीत हुआ था। यह काल मुगल शासन के चरमोत्कर्ष का काल था। इस काल की राजनीतिक परिस्थितियों के संबंध में विचार किया जा चुका है। राज्य व्यवस्था की दृष्टि से मुगल राज्य सामंत तंत्र आधारित राजतंत्र था। मुगल साम्राज्य में लगभग समूचे भारत के अधिकांश भू–भाग सम्मिलित थे। यह साम्राज्य काबुल से लेकर आसाम और बंगाल तक तथा कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक फैला हुआ था किन्तु मुगल शासकों का सीधा संबंध देश के सभी भू–भागों से नहीं था और न देश की किसी भी भू–भाग की प्रजा से था। पूरा देश अनेक प्रान्तों और राज्यों में बंटा हुआ था। मुगल बादशाह की ओर से सुबेदार नियुक्त किए जाते थे जो अपने प्रान्त के शासक ही होते थे। वे ठेकेदारी एवं जमींदारी पद्धति द्वारा ही प्रजा से कर वसूल करके अपना एक निश्चित भाग बादशाह के कोष में जमा करते थे और बादशाह की आज्ञा से विद्रोही राजाओं और नबाबों पर आक्रमण करते थे। वे सेना भी रखते थे और बादशाह जब भी युद्ध छेड़ता था ते सूबेदारों की सेना भी उसमें सम्मिलित होती थी। सूबेदारों के अतिरिक्त देश में बहुत से ऐसे राजा और नबाब भी थे। जो मुगल साम्राज्य के अधीन होते हुए भी लगभग स्वतंत्र थे। इनमें से अधिकांश मुगल दरबार में कोई ऊंचा पद जैसे पंच हजारी, दसहजारी आदि प्राप्त करते थे और आवश्यकता पड़ने पर बादशाहों वे सैन्य अभियान में अपनी सेना के साथ सम्मिलित होते थे। इस तरह मुगलकाल में राजा और प्रजा के बीच प्रत्यक्ष संबंध नहीं था। दोनों के बीच सूबेदारों नबाबों, जमींदारों और कर्मचारियों का विशाल समूह था जो विविध रुपों से प्रजा का शोषण करता था। बादशाहों को तथा नीचे के सूबेदारों, नबाबों और छोटे राजाओं को कोई निर्धारित राजधर्म या धर्मशास्त्रीय नियम मान्य नहीं था। वे पूर्णतया स्वेच्छाचारी, विलासी, अन्यायी और अत्याचारी थे। बादशाह और राजा की इच्छा ही कानून थी, जिसे कोई रोकने वाला नहीं था। धार्मिक भेदभाव और अत्याचार भी कम नहीं था। मंदिरों को तुड़वाना और इस्लाम विरोधियों का बलपूर्वक धर्म–परिवर्तन करना साधारण बात थी। इन सब बातों को तुलसीदास ने अपनी आंखों से देखा था, समस्त दर्द को भोगा था। उनका संवेदनशील हृदय ऐसे असहनीय शोषण और अन्याय को देखकर अवश्य तिलमिलाया होगा और तब उन्हें कलियुग का पौराणिक चित्रण अपनी आंखों के सामने यथार्थ होता दिखाई पड़ा होगा। राजा के भ्रष्ट और धर्मच्युत होने पर पूरा समाज उसी प्रकार का हो जाता है समस्त सामाजिक मर्यादायें टूट जाती है।

तुलसीदास ने रामचरितमानस, कवितावली, विनयपत्रिका और दोहावली के अनेक स्थलों पर कलियुग का जो चित्रण (वर्णन) किया है उसमें तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक दुर्दशापूर्ण आर्थिक स्थिति का यथार्थपूर्ण चित्र दिखाई पड़ता है। इस दुर्दशा का मूल आधार तत्कालीन सामंत तन्त्रीय व्यवस्था ही थी। इन प्रसंगों में तुलसी ने बताया है कि संस्कारहीन, अपपढ, और गंवार लोग देश के छोटे राजा और शासक हो गए हैं तथा विधर्मी मुसलमान सबसे

बड़ा राजा या बादशाह है। राजधर्म के चारों नियम– साम, दाम, दण्ड और भेद में से साम, दाम, और भेद तो समाप्त हो गये हैं, केवल प्रजा का कठोर दमन ही शेष रह गया है।

इस राजनीतिक परिस्थिति में देश का आर्थिक ढांचा भी चरमरा गया था। किसान अपने को भूमि का मालिक नही समझता था, व्यापारी वर्ग के व्यापार की सुरक्षा नहीं रह गयी थी, बार–बार अकाल पड़ते थे, लोगों के जीवन यापन के लिए कोई रोजगार नहीं रह गया था, न किसी को नौकरी ही मिल पाती थी, और लोग अन्न के लिए तरसने लगे थे।

तुलसी ने इस आर्थिक तथा सामाजिक दुर्दशा का कारण राजाओं की अर्धामिकता, और विलासिता को ही माना है। छोटे–छोटे राजा दिल्ली के दरबार में पहुंचकर मनसबदार और ओहदेदार होने में ही अपने जीवन की सार्थकता मानते थे। तुलसीदास के काव्य में भी इसका संकेत हुआ है। किन्तु राजा का यह धर्म माना गया है कि वह प्रजा से उतना ही प्रेम करे जितना पिता पुत्र से करता है। राजा का प्रजा के प्रति यह प्रेम और दया का भाव मुगलकाल में समाप्त हो गया था। रामचरितमानस स्वयं अपने युग के राजनीतिक संघर्ष का कथात्मक प्रतीक है, इसने राम को सद्प्रवृत्तियों के और रावण को असद्गुप्रवृत्तियों के प्रतीक के रुप में चित्रित किया गया है। तुलसी के युग का राजनीतिक मंच इन्हीं दोनों प्रवृत्तियों के संघर्ष का मंच बन गया था। भारत में मुस्लिम आक्रमण के साथ ही हिन्दू राजाओ का जो प्रभाव प्रारम्भ हुआ वह मुगलकाल में चरम सीमा तक पहुंच गया। अकबर के काल में राणा प्रताप को छोड़कर कोई भी हिन्दू राजा अपनी स्वतंत्रता के लिए तथा हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए कुछ भी करने को तैयार नहीं था। मुस्लिम राज में अकबर को छोड़कर अन्य सभी बादशाहों ने हिन्दूओ को काफिर समझकर उनके साथ वैसा ही व्यवहार किया जैसा रावण ने देवोपासक वैदिक परंपरा के लोगों के साथ किया था। इस धर्म युद्ध का विशाल क्षेत्र उत्तर भारत से दक्षिण भारत तक समूचा देश था। ठीक वही क्षेत्र मानस में भी दिया गया है जिसमें श्रीलंका का सम्राट रावण वैदिक धर्म का नाश करने के लिए कटिबद्ध होकर सबको पराजित करता और अपना अभियान तीव्रगति से उत्तर भारत की ओर बढ़ाता चला गया। मुस्लिम काल में हिन्दू धर्म का नाश करने के लिए जो धार्मिक लहर पश्चिम से आयी वह उत्तर भारत से दक्षिण की ओर अग्रसर हुई और मुगल काल तक पहुंचते–पहुंचते मुसलमानों का राज्य रावण राज्य के समान सार्वभौम हो गया। इस युगीन राजनीतिक परिप्रेक्ष्य का प्रतीकात्मक चित्रण रामचरितमानस में आद्यन्त हुआ है।

इसमें ब्राह्मण–भोजन, यज्ञ और श्राद्ध पर राज्य द्वारा प्रतिबन्ध लगाने की बात कही गयी है। इसी प्रकार के प्रतिबन्ध कट्टर मुसलमान शासकों ने भी लगाया था और जिन–जिन स्थानों पर शासक जाति का अधिक्य था वहां मंदिरों में घंटा बजाना और खुले आम धार्मिक कार्य सम्पन्न करना बंद हो गया था। जिस प्रकार उपर्युक्त कथा में रावण अपने पुत्र मेघनाद को देवताओं को विजित करने के लिए भेजता है और स्वयं भी दिग्विजय करने के लिए निकलता है। उसी प्रकार मुस्लिम काल में अलाउद्दीन खिलजी, बाबर, हुमायूं, अकबर, शाहजहां और औरंगजेब ने भी किया

था। दिल्ली के मुस्लिम बादशाहों की भारत की सार्वभौम विजय रावण की दिग्विजय से समानता रखती है।

इस प्रकार प्रत्यक्ष रुप से भी इन्होंने रावण राज्य के वर्णन द्वारा तथा कलियुग के चित्रण के माध्यम से मध्यकालीन निरंकुश राजतंत्र का विस्तार से वर्णन किया है। तुलसी का राजनीतिक ज्ञान अपने युग की राजनीतिक स्थिति तक ही सीमित नहीं है उन्होंने अपने समस्त साहित्य में दण्डनीति के विविध पक्षों, यथा–राज्य के स्वरुप, राज्य के अंग, राजधर्म आदि के संबंधों में भी स्थान–स्थान पर विराद वर्णन किया है। ऐसे स्थलों पर कवि ने अपने राजनीतिक दृष्टिकोण और विचारधारा को स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया है। मनुष्य जीवन के चारों पुरुषाथों– धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की सिद्धि तभी संभव है जबकि देश में राजनीतिक स्थिरता और शान्ति हो, मानव समाज की सुरक्षा ही नहीं धर्म और संस्कृति की रक्षा और उन्नति भी राजनीतिक सुव्यवस्था पर ही निर्भर करती है। इस कारण महान कवियों के जीवन मूल्यों में राजनीतिक मूल्य भी अनिवार्यतः सम्मिलित होते हैं। तुलसी ने भी अपने राजनीतिक दृष्टिकोण को जीवन मूल्य के रुप में ही निरुपित किया है। यहां राज्य के स्वरूप तथा आदर्श राज के संबंध में तुलसीदास के विचारों का अलग–अलग परीक्षण किया जाएगा।

राज्य का स्वरुपः–

महान कवि युगीन परिस्थितियों के प्रति अपनी प्रतिक्रिया को किसी न किसी रुप में अवश्य व्यक्त करते हैं। तुलसीदास ने अपनी प्रतिक्रिया दो रुपों में व्यक्त की है– प्रथमतः कलियुग को उन्होंने अपने युग का प्रतीक मानकर उसका विस्तृत वर्णन किया है। द्वितीयतः राम के जीवन वृत्त के माध्यम से उन्होंने एक आदर्श राजा और आदर्श राज्य का व्यापक चित्रण किया है। उनके इस राजनीतिक चित्र का फलक बहुत ही विशाल है, जो प्राचीन भारत के राजधर्म और राज्यतंत्र के सर्वथा अनुरुप है। रामचरितमानस की कथावस्तु का काल त्रेतायुग है तथा 'देश" समस्त भारतवर्ष है जिसके अन्तर्गत श्रीलंका भी सम्मिलित है। इस कथानक का रंग मंच अयोध्या से लेकर लंका तक का विशाल भू–भाग है जिसमें आर्यावर्त के 'कोशल" विदेह राज्य के साथ–साथ विन्ध्यातटवी के निषाद राज्य, किरात राज्य, दण्ड कारण्ड और किविकंधा के वानर भालु राज्यों तथा सूदूर दक्षिण के राक्षस राज्यों को भी सम्मिलित किया गया है। गोस्वामी तुलसीदास ने राजशास्त्र के ढंग से यह नहीं बताया है कि राज्य कितने प्रकार के होते हैं, और राम के समय में कितने प्रकार के राज्य वर्तमान थे किन्तु उन्हें राज्य के विविध रुपों की जानकारी अवश्य थी। इस ज्ञान को उन्होंने मानस में विभिन्न राजाओं के वर्णन के प्रसंग में प्रदर्शित किया है। उन्होंने कुल पांच प्रकार के राज्यों का वर्णन किया है– स्वतंत्र लघु राज्य अथवा माण्डलिक राज्य, महाराज्य, अधिपत्य राज्य, सार्वभौम राज्य और पारमेष्ठ्य राज्य।

स्वतत्र लघु राज्यः–

रामचरितमानस में कोशल के इक्ष्वाकुवंशीय राज्य और रावण राज्य के अतिरिक्त केवल चार अन्य राजाओं का वर्णन किया गया है। वे राज्य हैं – केकय देश में सत्यकेतु के पुत्र प्रतापभानु का

राज्य, मिथिला देश के विदेह जनक का राज्य, कोशल देश के दक्षिण में यमुना तटवर्ती निषाद राज्य और दण्डकारण्य स्थित किष्किन्धा में वानर राज्य। इन छह राज्यों में से केकय देश, कोशल देश और लंका के राज्य बहुत बड़े राज्य थे जिनके संबंध में बाद में विचार किया जाएगा। शेष तीन राज्य राम के युग के स्वतंत्र लघु राज्य थे। निषादों का राज्य गंगा और यमुना के मध्य में तथा यमुना के दक्षिण में चित्रकूट तक स्थित था।

संभवतः यह कोशल देश का पड़ोसी मित्र था जो कोशल के राजाओं के साथ समय–समय पर सहयोग लिया करता था। इसका राज्य निषादराज "गुह" वनवासी जातियों– कोल, भील, किरात, निषाद और शबर आदि का शासक था। इसलिए राम, लक्ष्मण और सीता के साथ जब अयोध्या से निष्काषित होकर विन्ध्यातटवी की ओर अग्रसर हुए तो दशरथ की आज्ञा से 'सुमंत्र"' अपने रथ पर चढ़ाकर उन्हें कोशल राज्य की सीमा तक पहुंचा गए। यह सीमा गंगा के उत्तरी किनारे पर थी। सीमा पर निषादराज के सैनिकों ने राम, लक्ष्मण और सीता को देखकर इसकी खबर अपने राजा को दी। जिसे सुनकर निषाद राज अपने सेवकों तथा पारिवारिक जनों के साथ राम के स्वागत के लिए पहुंचा। इसी से पता चलता है कि निषादों का यह राज्य स्वतंत्र होते हुए भी या तो कोशल देश का मित्र राज्य था अथवा नाममात्र के लिए कोशल की अधीनता स्वीकार करके भी लगभग स्वतंत्र ही था। राम ने प्रथम मिलन में ही निषाद राज को अपना मित्र बना लिया। इस तरह राम ने अपने पिता और पितामढ के समय से चली आती कोशल एवं निषाद राज की मैत्री को और भी सुदृढ़ बना लिया। यह लघुराज्य सभ्यता और सैन्य शक्ति में अधिक विकसित नहीं था। वनवासी जातियों के राजा जैसे हो सकते हैं, वैसे ही निषाद राज गुह भी था। उसके परिवारी जन और जाति के लोग ही उसके सैनिक थे जिसके पास लाठी, बांस के अतिरिक्त कोई अस्त्र नहीं था। निषाद की मैत्री राम से हो चुकी थी और निषाद यह भी जान चुका था कि कैकेयी के पुत्र भरत के लिए ही राम को वनवास दिया गया है।

निषाद राज्य के समान ही किष्किन्धा का वानर राज्य भी, वनवासी वानर जाति का राज्य था किन्तु यहां एक राज्य प्रणाली नहीं बल्कि द्वैराज्य शासन प्रणाली प्रचलित थी। यह राज्य तो एक ही था किन्तु राजा दो थे– बलि और सुग्रीव जो अलग–अलग रहते थे और दोनों में भयंकर वैमनस्य था। यह भी असंगठित और लघुराज्य था और कोशल तथा लंका के मध्य स्थित होने के कारण इसका राजनीतिक और सामरिक महत्व बहुत अधिक था। इसलिए राम ने किष्किन्धा के राजा से भिन्नता स्थापित करना आवश्यक समझा। उन्होंने रावण के भिन्न बालि का वध इसलिए किया कि बालि के शत्रु सुग्रीव उनके मित्र बन जाय और सीता की खोज करने में सहायक हों।

संदर्भ

- कामायनी– जयशंकर प्रसाद।
- गोस्वामी तुलसीदास (भारतीय साहित्य के निर्माता)– रामजी तिवारी साहित्य अकादमी।

- गोसाई चरित– भवानी दास।
- गोसाई चरित्र– डॉ0 दासान्यदास।
- गोस्वामी तुलसीदास– डॉ0 मायाप्रकाश पाण्डेय, कलामन्दिर वितरक, नई सड़क दिल्ली।
- तुलसीदास साहित्य में मार्मिक प्रसंगों का मनोवैज्ञानिक अनुशीलन।
- ओंकार नाथ सिंह– इंटरनैट।
- तुलसी ग्रन्थावली भाग 2, सं0 रामचन्द्र शुक्ल 2004 वि0 काशीनागरी।
- तुलसीदास और उनके काव्य– डॉ0 रामदत्त भारद्वाज 4964, सूर्य।
- तुलसीदास और उनका साहित्य– डॉ0 विमल कुमार जैन।
- तुलसीदास की कारयित्री प्रतिभा– डॉ0 श्रीधर सिंह प्र0 सं) 968 ई0 हिन्दी प्रचारक प्रकाशन,
- रामचरित मानस– साहित्यिक मूल्यांकन– सुधाकर पाण्डेय– राधा कृष्ण प्रकाशन प्रा0 लि0 4999
- पाश्चात्य विद्वानों की दृष्टि में – गोपाल सिंह– चिन्तन प्रकाशन, कानपुर।
- मानस का मूलाधार व रचना विषयक समालोचनात्मक अध्ययन शार्लोत नोदनील कृत।